ललित महपा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी, दरभंगा
(L.N.M.U)

मैथिली प्रतिष्ठा
स्नातक - तृतीय खण्ड
षष्ठ - पत्र -: आधुनिक मैथिली काव्य

नरेश कुमार
सहायक प्राचार्य
मैथिली विभाग
दिनांक 30/10/2020

व्याख्यानक संक्षिप्त अंश (पहिल भाग)

सुंदरकांड - शेखर प्रकाशन, पटना।

प्रश्न :- सुंदरकांडक आधार पर लंका अग्निकांडक विभीषिका सँ परिचय कराउ ?

उत्तर :- कवीश्वरक चंदा झाक मिथिला भाषा रामायणमे सुन्दरकांड सभसँ बेसी प्रशस्त काण्ड अछि। सम्पूर्ण सुन्दरकांडक घटना-क्रमकेँ पाँच भागमे विभाजित कयल गेल अछि।

(i) हनुमान द्वारा समुद्र लंघन आ लंकामे प्रवेश
(ii) हनुमान द्वारा सीताक खोज आ रावण-सीता संवाद।
(iii) सीता संवाद आ अशोकवाटिकाक विध्वंस।
(iv) रावण हनुमान संवाद आ लंका दहन।
(v) लंकासँ हनुमानक वापसी।

कवीश्वर सुंदरकांडमे लंका अग्निकांडक विभीषिकाकेँ नीक जकाँ चित्रित करैत कहैत छथि-

अग्निमान त्रिकूट अचल अनुमान भेल
धूम-धार नभ घन प्रलय समान रे
आगि-आगि पानि भेल धह-धह धनि भेल
कपि-मन आनि भेल संग पवमान रे।

आगिलग्गीक भयावहताक वर्णन करैत कवीश्वर कहैत छथि जे मानू त्रिकूट पर्वत, जाहि पर लंका बसल छल अग्निमान भ' गेल हो। भाषा-भूमिये जँ आगिक बनल हो तँ भीषणताक आर कोन उपमान ताकल जाय ?

30/10/2020